जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

ज्ञान भी पुण्य-पाप रूप अनेक कर्मों को, उनके फल को, उनके बंध को, निर्जरा व मोक्ष को जानता ही है, करता नहीं। ह्न आ. कुन्दकुन्द
और उनके पंच परमागम, पृष्ठ :49

वर्ष : 29, अंक : 5 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

40 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 880 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 38 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 176 एवं बाल कक्षाओं में 120 विद्यार्थी सम्मिलित। * शिविर में 72 हजार, 270 रुपयों का सत्साहित्य एवं 880 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

देवलाली (नासिक-महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा दिनांक 9 मई से 26 मई, 2006 तक आयोजित 40 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के समाचार मई (द्वितीय) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रात: कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार के बंधाधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। पाँच दिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के स्वरचित नींव का पत्थर पुस्तक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

रात्रि कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मोक्षमार्गप्रकाशक के निश्चयाभासी प्रकरण पर मार्मिक प्रवचनों के पूर्व पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित दिनेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ एवं पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् वी.सी.डी. के माध्यम से टी.वी. पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण किया जाता था।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित संजयजी राऊत कचनेर, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित इन्द्रजीतजी गंगवाल इन्दौर, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी माद्रप एलोरा, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित संतोषजी दहातोंडे परली, पण्डित बी.जी. श्रीपाल जयपुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित प्रशान्तजी मोहरे सोलापुर एवं पण्डित संतोषजी सावजी अम्बड़ के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के निर्देशन में पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि तथा पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के सहयोग से पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा बहुत ही रोचक शैली में ली गई।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि ने ली।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में ह्न पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती राजकुमारीबेन जयपुर, श्रीमती लताजी जैन देवलाली एवं श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, **गुणस्थान विवेचन** एवं **रत्नत्रय की पूर्णता** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन, **कारण-कार्य रहस्य** एवं **करणानुयोग परिचय** की कक्षा डॉ. उज्ज्वलाजी शहा, **लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका** की कक्षा पण्डित दिनेशभाई शहा, **क्रमबद्धपर्याय** की कक्षा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, **तत्त्वज्ञान पाठमाला** की कक्षा पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री एवं **छहढाला** की कक्षा पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिला।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में किया गया; जिसमें लगभग 120 छात्र सम्मिलित हुये। ज्ञातव्य है कि

(शेष पृष्ठ 3 पर ....)

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

४. अच्छे अवसर द्वार खटखटाते आते हैं

(गतांक से आगे....)

भाई ! भगवान की पूजा-भक्ति के माध्यम से अपने को पहचान कर स्वयं **भक्त से भगवान की श्रेणी में पहुँच जाना ही पूजा का मूलभूत प्रयोजन है।**''

शास्त्रीजी द्वारा ऐसे सरल-सुबोध शैली में किए समाधान से ज्ञानेश तो हर्षित हुआ ही, अन्य लोग भी लाभान्वित हुये।

शास्त्रीजी की विद्वता और प्रवचन से प्रभावित होकर ज्ञानेश ने शास्त्रीजी के सान्निध्य में रहकर उनके द्वारा प्रवाहित ज्ञान-गंगा में आकंठ निमग्न होकर ज्ञानामृत का पान किया। आध्यात्मिक शास्त्रों का गहन अध्ययन, मनन, चिन्तन करके ज्ञानार्जन किया और ज्ञान-गोष्ठी में शंका-समाधान द्वारा अपने ज्ञान का परिमार्जन करके अपनी श्रद्धा एवं ज्ञान को खूब निर्मल किया। ज्ञान के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने के लिए पूरे उत्साह के साथ नवीन-नवीन योजनाएँ प्रस्तुत कीं। शास्त्रीजी को ज्ञानेश की योजनाएँ बहुत पसन्द आयीं। सचमुच शास्त्रीजी को ज्ञानेश जैसा सक्रिय, उत्साही और प्रतिभाशाली शिष्य पाकर भारी हर्ष था।

योजनाएँ तो उत्तम थीं हीं, इस काम के लिए शास्त्रीजी अपनी पूरी चल-अचल सम्पत्ति धर्म प्रचार-प्रसार में ही समर्पित कर देना चाहते थे। उनकी भावना के अनुसार धीरे-धीरे उनके साधारण से आवास ने **दिनेश विद्या आश्रम नाम से शिक्षण-संस्थान** का रूप ले लिया। सर्वप्रथम वहाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविरों की शृंखला का शुभारम्भ हुआ। लोग दूर-दूर से इन शिक्षण-शिविरों का लाभ लेने हेतु आने लगे। ज्ञानेश द्वारा उन शिविरार्थियों को पढ़ाने के लिए कक्षाओं की सुनियोजित व्यवस्था की गई और शिक्षक भी तैयार किये गये।

वह धर्मरूप वटबीज ज्ञानेश के सद्प्रयासों से धीरे-धीरे विशाल वटवृक्ष के रूप में पल्लवित होता चला गया; जिसकी चतुर्दिक फैली बड़ी-बड़ी शाखाओं की शीतल छाया में सहस्रों श्रोता नियमित धर्मलाभ लेने लगे।

ज्ञानेश को विचारों में डूबा देख धनेश ने कहा ''कहो भाई ज्ञानेश! किन विचारों में डूबे हो ? क्या सोच रहे हो ? व्यर्थ के सोच-विचार में अपना माथा खराब क्यों करते रहते हो ?

अरे भाई ज्ञानेश ! कहाँ वे 72 वर्षीय बूढ़े-बाबा दिनेशचन्द्र शास्त्री और कहाँ तू पच्चीस वर्ष का हट्टा-कट्टा जवान ? ये दिन तो तेरे मौजमस्ती करने के हैं, सैर-सपाटे करने के हैं, खूब कमाओ और खूब खर्च करो, हँसी-खुशी के साथ सपरिवार सुख से जिओ। क्या ये दिन इसतरह शरीर सुखाने के हैं ? वाह भाई वाह ! यदि यही सब करना था तो गृहस्थी के चक्कर में पड़ा ही क्यों ? उस बेचारी सुनीता को अपने प्यार के चक्कर में क्यों फँसाया ? अब पारिवारिक उत्तरदायित्वों से पलायन करना भी तो पाप ही है न ?''

धनेश ने धर्म की कटु आलोचना करते हुये आगे कहा ह्न

''हालाँकि मेरी पत्नी धनश्री भी मेरे इन विचारों और आदतों से परेशान रहती है, झिकझिक भी वह बहुत करती है। धर्म-पत्नी जो ठहरी। 'धर्म' का तो चक्कर ही कुछ ऐसा है; जिसके साथ भी यह 'धर्म' नाम जुड़ जाता है; उसे तो परेशान होना ही होना है। तुम स्वयं ही देख लो न ! 'धर्म' के चक्कर में पड़ते ही फँस गये न चिन्ताओं के चक्कर में। धर्म की तो क्या, हम तो धंधे की भी चिन्ता नहीं करते।

अरे ! जितने दिन की जिंदगी है, उतने दिन मस्ती में ही क्यों न जियें। अन्त में तो हम सबको यहीं मिट्टी में मिलना ही है।''

ज्ञानेश को धनेश की नास्तिकता पूर्ण बातें सुनकर झुंझलाहट तो बहुत हुई; पर वह मन मारकर रह गया।

वह सोचने लगा ह्न ''एक नहीं, अनेक विषयों में निपुण और तकनीकी विद्या में पारंगत व्यक्ति धर्म के संबंध में इतना अनजान कैसे? हाँ, ज्ञानियों ने ठीक ही कहा है ह्न **प्रत्येक विषय को जानने की ज्ञान की योग्यता स्वतंत्र होती है।** अब तो वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से भी यह बात सिद्ध हो चुकी है कि बुद्धिमान व्यक्ति की बुद्धि भी हर क्षेत्र में एक जैसा कार्य नहीं करती। एक विषय के विशेषज्ञ व्यक्ति दूसरे विषय में सर्वथा अनभिज्ञ भी देखे जाते हैं; क्योंकि प्राप्तज्ञान में जिस विषय को जानने की योग्यता होती है; वही विषय उस ज्ञान के जानने में आ सकता है, अन्य नहीं।

एक बहुत बड़े वैज्ञानिक के बारे में कहा जाता है कि उसे इतनी मोटी बात समझ में नहीं आ रही थी कि ह्न एक ही रास्ते से दो (छोटी-बड़ी) बिल्लियाँ अन्दर-बाहर कैसे आ-जा सकती हैं? अत: वह दोनों बिल्लियों को अन्दर-बाहर आने-जाने के लिए दो द्वार बनाने का आग्रह तब तक करता रहा, जब तक कि उसे एक ही द्वार से दोनों बिल्लियाँ निकालकर प्रत्यक्ष नहीं दिखा दीं गईं।

यह जरूरी नहीं कि एक बहुत बड़ा इंजीनियर, डॉक्टर, एम.बी.ए. और आई.ए.एस. व्यक्ति चाय भी अच्छी बना सके, शर्ट का बटन भी टाँक सके। ऐसी स्थिति में यदि धनेश धरम-करम से अनजान है तो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।''

ज्ञानेश ने धनेश को समझाया – ''मित्र ! अपने बारे में, आत्मा-परमात्मा के बारे में, संसार, शरीर व भोगों की क्षणभंगुरता एवं संसार की असारता के बारे में विचार करने से माथा खराब नहीं होता, बल्कि ऐसे विचार से अनादिकाल से खराब हुआ माथा ठीक होता है।''

ज्ञानेश ने आगे कहा – ''माथा खराब होता है मोह-राग-द्वेष और कषाय के कलुषित भावों से, माथा खराब होता है गैरकानूनी व्यापार-धंधों से चिपके रहने में, अनुचित लाभ उठाने के लोभ में, दिन-रात खोटा ध्यान करने में, जिसका फल नरक है। भाई ! सबसे अधिक माथा खराब होता है दूसरों को नीचे गिरा कर आगे बढ़ने के विचारों में, दूसरों का भला-बुरा करने की चिन्ता में। अत: यदि तुम अपना भला चाहते हो, अपना माथा ठीक रखना चाहते हो तो मैं जो कहता हूँ, उस पर गंभीरता से विचार करो और अपने इस भौतिकवादी भोगप्रधान दृष्टिकोण को बदलो।

धनेश ! मैं जानता हूँ कि तुझे मेरी सलाह की गर्ज नहीं है, पर न जाने क्यों मेरा मन मुझे तुझसे कभी-कभी कुछ कहने को मजबूर कर देता है। इसी सिलसिले में एक बात और कहने का मन हो रहा है। वह यह कि ह्न **ये जो खोटे भाव (पाप) होते हैं, इनका फल क्या होगा?** इस बात पर भी थोड़ा विचार करना।

भाई ! मुझे और कोई चिन्ता नहीं है। आजकल मैं जब कभी थोड़ी-बहुत देर के लिए दुकान पर जाता हूँ तो वहाँ मेरा मन ही नहीं लगता। मैं वहाँ बैठा-बैठा भी इसी संदर्भ में सोचता रहता हूँ। इससे मैं बहुत से अनर्थकारी विचारों से बचा रहता हूँ। यदि तुम भी अपने में होनेवाले भावों के बारे में विचार करोगे और उनसे होने वाले पुण्य-पाप के बारे में चिन्तन करोगे तो तुम्हारे जीवन में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सकता है और अनुपम आनन्द की झलक आ सकती है।''

धनेश ने रूखा-सा जवाब दिया ह्न ''मित्र ! तुम्हारा चिन्तन तुम्हें ही मुबारक हो और तुम्हारे जैसा जीवन भी तुम्हें ही मुबारक हो।''

ज्ञानेश ने कहा ह्न ''भाई ! परामर्श मानने के लिये कोई किसी को बाध्य नहीं कर सकता, करना भी नहीं चाहिये। इसके लिये तुम पूर्ण स्वतंत्र हो, पर कभी-कभी तुम मिलने-जुलने तो आते ही रहना। विचारों के आदान-प्रदान से कभी किसी को कुछ न कुछ लाभ तो होगा ही।

आत्मचिन्तन आत्मा-परमात्मा की शोध-खोज का सर्वोत्तम साधन है, आत्मोपलब्धि का और अज्ञानजन्य आकुलता को मेटने का अमोघ उपाय है।''

धनेश ने कहा ह्न ''हाँ, हाँ; आऊँगा, अवश्य आऊँगा। आखिर बचपन के मित्र जो हैं और **विचारशील व्यक्तियों में मतभेद तो होते ही हैं, पर उनमें मनभेद नहीं होना चाहिये।**'' ●

(हत्यारा कौन ? पृष्ठ 5 का शेष ....)

जाये। इसे फाँसी के फन्दे पर लटका दिया जाय। जब तक यह जीवित रहेगा, तब तक कषायरूपी गुण्डे पैदा होते रहेंगे; किन्तु इसके मरने पर अनन्त संसार के कारणभूत गुण्डे (अनन्तानुबंधी आदि कषायें) अपने आप ही मर जाते हैं। कुछ नौसिखिये गुण्डे जरूर रहते हैं; परन्तु मिथ्यात्व के अभाव में वे ज्यादा समय तक टिकते नहीं हैं। काल पाकर स्वतः ही काबू में आ जाते हैं; क्योंकि इनका पोषण करने वाला अपराधी महापापी मिथ्यात्व पहले ही मर चुका होता है।

इस महापापी के रहते हुए कषायरूपी गुण्डे कुछ काल के लिये दब तो सकते हैं अर्थात् कषायों की मंदता तो हो सकती हैं; परन्तु कषायों का अभाव नहीं हो सकता। जरूरत कषायों के अभाव करने की है और यह कार्य मिथ्यात्व के रहते कभी भी संभव नहीं है, इसलिये हे महानुभावों ! सबसे बड़ा अपराधी यह मिथ्यात्व ही है। सबसे पहले इसका अभाव करने की जरूरत है।

यह महापापी कहीं आपके भीतर भी तो छुपा हुआ नहीं हैं ? टटोलिये, अपने आपको ! और यदि आपके भीतर भी यह महापापी छुपा हुआ है तो भेदविज्ञान रूपी प्रज्ञाछैनी से सबसे पहले इस पर प्रहार कीजिये। बस, आज की इस प्रेस कान्फ्रेन्स के आयोजन का यही मकसद है।

धन्यवाद ! जयजिनेन्द्र !! **(समाप्त)**

(शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न, पृष्ठ 1 का शेष ...)

अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

अन्य गतिविधियाँ ह्न प्रतिदिन ब्र. यशपालजी जैन के निर्देशन में कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रात्रि में डॉ.शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गए।

शिविर के मध्य एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पश्चाताप खण्डकाव्य का उन्हीं के सान्निध्य एवं मार्मिक उद्बोधन सहित पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट के मधुर स्वरों में पाठ किया गया। उपस्थित जन-समुदाय ने इसे मंत्र मुग्ध होकर सुना तथा मुक्त कंठ से इसकी सराहना की।

विमोचन : शिविर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर लिखित **ज्ञायकभावप्रबोधिनी हिन्दी टीका** ग्रन्थ का; पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित जिन खोजा तिन पाईयाँ एवं ये तो सोचा ही नहीं; ब्र. यशपालजी जैन द्वारा लिखित गुणस्थान विवेचन के गुजराती संस्करण एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित शब्दों की रेल तथा जैन जी.के. भाग 3 व 4 पुस्तकों का विमोचन उपस्थित गणमान्यों द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि समयसार विमोचन के अवसर पर विमोचनकर्त्ता श्री कान्तिभाई मोटाणी परिवार द्वारा शिविर में पधारे समस्त विद्वानों को डॉ. भारिल्ल कृत समयसार-टीका ग्रन्थ भेंट किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन ह्न शुक्रवार, दिनांक 26 मई को दोपहर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता एवं श्री सुमनभाई दोशी राजकोट के मुख्यातिथ्य में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन ज्ञायक जैन देवलाली एवं कु. खुशबु मेहता भायन्दर-मुम्बई ने किया। सम्मेलन में पन्द्रह प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार प्रदर्शन पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

दीक्षान्त एवं समापन समारोह ह्न दिनांक 26 मई को रात्रि में ही शिविर का दीक्षान्त एवं समापन समारोह सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि श्री सुमनभाई दोशी थे। इनके अतिरिक्त समस्त विद्वतगण एवं अध्यापकगण भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया तथा शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई ने बाल कक्षाओं के 120 छात्रों की रिपोर्ट व परिणाम प्रस्तुत किया।

बालबोध प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** श्रीमती श्रुति-अभय जैन खैरागढ़ एवं श्रीमती तृप्ति-वीरेन्द्रकुमार जैन इन्दौर, **द्वितीय स्थान** डॉ. रेखा-नवनीत जैन पुणे तथा **तृतीय स्थान** कु. मंजुषा भरत सावजी देवलगांवराजा ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** ज्ञायक-अभयजी शास्त्री देवलाली, **द्वितीय स्थान** कु. खुशबु मेहता भायंदर एवं **तृतीय स्थान** अनुराग जैन भगवाँ ने प्राप्त किया। उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

समारोह का कुशल संचालन पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

कहानी ...

हत्यारा कौन ?

ह्न जयन्तिलाल जैन, नौगामा

आत्मारूपी मकान में सुख नाम के एक व्यक्ति की हत्या हो गई। सुख तो चला गया, चिन्तारूपी चिता (अग्नि) की भेंट चढ़ गया; परन्तु पीछे कई सवाल छोड़ गया ह्न आखिर उसकी हत्या किसने की ? हत्या के पीछे खूनी का मकसद क्या था ? सुख ने किसी का क्या बिगाड़ा था ?

वारदात की तफ्तिश का कार्य इन्सपेक्टर विवेककुमार को सौंपा गया। इन्सपेक्टर विवेककुमार ने सर्वप्रथम इस बात का पता लगाने की कोशिश की कि आत्मारूपी मकान के जिस कमरे में सुख नाम का शख्स रहता था, उसके आस-पास बाकी के कमरों में कौन-कौन व्यक्ति रहते थे। इस बात की जानकारी लेने में उसे कोई विशेष तकलीफ नहीं हुई। अगल-बगल में क्रोधीलालजी और मानमलजी रहते थे। सामने की तरफ मायाबाई का कमरा था तथा पीछे के कमरे में लोभीलालजी रहते थे। इसके अलावा इस पूरे परिसर में जो-जो व्यक्ति रहते थे उनमें मुख्य थे ह्न हिंसाचन्दजी, झूठमलजी, चोरीबाई, कुशीलबाई तथा परिग्रहप्रसादजी। इसके अलावा जिन-जिन व्यक्तियों का वहाँ अक्सर आना-जाना होता रहता था, उनमें हास्य, रति, अरति, शोक, भय, ग्लानि, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, ईमानदारी, नैतिकता, परोपकार आदि मुख्य थे।

इतने सारे व्यक्तियों में से अपराधी को खोज निकालना बडा मुश्किल कार्य था; परन्तु इन्सपेक्टर विवेककुमार इस कार्य में काफी महारत हासिल कर चुका था। इसके पहले भी वह हत्या की बडी-बडी गुत्थियाँ सुलझा चुका था।

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से यह साफ जाहिर था कि सुख को बहुत ही तड़पा-तड़पा कर मारा गया है। सिवाय क्रोध के यह कार्य और कोई नहीं कर सकता था, इसलिये शक की सुई सर्वप्रथम क्रोधीलालजी की तरफ ही जाती थी।

इन्सपेक्टर विवेककुमार ने क्रोधीलालजी को पूछताछ के लिये थाने में बुलाया। क्रोधीलालजी इस घटना के सम्बन्ध में अनभिज्ञता प्रगट करते हुए बोले - मैं कुछ नहीं जानता साहब, मैं बिल्कुल बेकसूर हूँ।

इन्सपेक्टर विवेककुमार ने रिमांड पर लेने की धमकी देते हुए एक झापड़ क्या जमाया कि क्रोधीलालजी ने थर-थर काँपते हुए सारी सच्चाई उगल दी और बोले ह्न मुझे मत मारो साहब ! मैं सब कुछ साफ-साफ बताता हूँ। मैं तो सुपारी लेकर काम करता हूँ। हत्या की साजिश रचने वाला तो कोई और ही है।

कौन है ? ह्न इन्सपेक्टर विवेककुमार ने पूछा।

मैं उसका नाम नहीं बता सकता साहब ! वह बड़ा खतरनाक आदमी हैं। वह मुझे जान से मार डालेगा ह्न क्रोधीलालजी बोले।

नाम बताओ वरना जान से तो तुम्हें हम मार डालेंगे। तुम नाम बता दो तो हम तुम्हें सरकारी गवाह बना लेंगे, तुम्हें बचा लेंगे। तुम्हें सिर्फ कोर्ट में उसके खिलाफ गवाही देनी होगी।

सच में, सच में साहब आप हमें बचा लोगे न ह्न क्रोधीलालजी बोले।

हमें ! हमें से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ? क्या और लोग भी तुम्हारे साथ इस हत्याकांड में शामिल हैं ह्न इन्सपेक्टर ने पूछा।

हिंसाचन्दजी भी उस समय मेरे साथ थे। हम दोनों ने मिलकर इस वारदात को अंजाम दिया है। असली गुनहगार तो हिंसाचन्दजी ही हैं। मैं तो थोड़ा दूर खड़ा था।

चलो जल्दी से अब उस व्यक्ति का नाम भी बता दो, जिसने तुम्हें इस काम के लिये सुपारी दी थी।

आप मुझे बचा लोगे न साहब ह्न क्रोधीलालजी बोले।

हाँ, हाँ ! हम तुम्हें जरूर बचा लेंगे ह्न इन्सपेक्टर बोला।

साहब ! उसका नाम लोभीलालजी हैं। वे बड़े खतरनाक आदमी है। जब उनकी किसी भी इच्छा की पूर्ति नहीं होती, तब वे हमें आदेश देते हैं। हम तत्काल ही प्रगट होते और सुख की पिटाई कर देते थे। इस बार पिटाई कुछ ज्यादा हो गई, जिसके कारण वो मर गया। उसको मारने का इरादा हमारा बिल्कुल भी नहीं था ह्न क्रोधीलालजी अपना बचाव करते हुए बोले।

और कौन-कौन व्यक्ति हैं ? जो लोभीलालजी के इशारे पर काम करते हैं।

शोक, भय, ग्लानि, मायाबाई, मानमलजी वगैरे भी लोभीलालजी के लिये सुपारी लेकर कभी-कभार काम करते हैं। ये सभी लोभीलालजी के पाले हुए गुण्डे हैं।

हूँ, तो ये बात है। हवलदार ! क्रोधीलालजी को लॉकअप में बन्द कर दो और चलो मेरे साथ। हमें शीघ्र ही लोभीलालजी समेत बाकी गुण्डों को भी गिरफ्तार करना होगा ह्न इन्सपेक्टर विवेककुमार हवलदार को आदेश देते हुए बोला और शीघ्र ही अपनी जीप की तरफ रवाना हुआ।

सभी गुण्डे गिरफ्तार हो गये; परन्तु लोभीलालजी बड़े चालाक निकले। अपनी गिरफ्तारी की भनक उन्हें पहले से ही लग गयी थी, इसलिये वे कहीं अण्डर-ग्राउण्ड हो गये।

एक मुखबिर की सूचना पर आखिर उन्हें भी धर दबोचा गया।

मुझे किस अपराध में गिरफ्तार किया जा रहा है ? मुझे छोड़ दो, मैं बेकसूर हूँ। असली अपराधी तो कोई और ही है ह्न लोभीलालजी बोले।

कौन है? ह्न इन्सपेक्टर ने पूछा।

मैं नहीं जानता वह कौन है? लेकिन है बड़ा चालाक आदमी। वह कभी भी हमारे सामने प्रगट नहीं होता। अदृश्य रहकर हमें आदेश देता है और अपराध करने के लिये मजबूर करता है ह्न लोभीलालजी बोले।

साहब यह झूठ बोल रहा है, लगता है हमें उल्लू बना रहा है। असली अपराधी तो यही है ह्न हवलदार ईमानसिंह बोला।

तुम ठीक कहते हो ! चलो इसे थाने ले चलो और लॉकअप में बन्द कर दो ह्न इन्सपेक्टर ने हवलदार को आदेश दिया।

अगले दिन लगभग सभी अखबारों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि पुलिस ने सुख की हत्या की गुत्थी सुलझा ली है। हत्या के आरोप में लोभीलालजी समेत कई गुण्डों को गिरफ्तार कर लिया गया है। हत्या में लोभीलालजी जैसे सम्भ्रान्त व्यक्ति का हाथ होने पर सभी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। साथ ही इस बात की खुशी भी थी कि अब सुख जैसे मासूमों की कभी भी हत्या नहीं होगी।

लेकिन यह क्या ? अभी कुछ ही दिन व्यतीत हो पाये थे कि उसी परिवार में सुख की सहेली शांतिबाई की हत्या हो गयी।

इन्सपेक्टर विवेककुमार का माथा ठनका। सभी गुण्डे हवालात में बन्द हैं, फिर हत्या किसने की ? ये नये गुण्डे कहाँ से आ धमके ?

एक बार फिर से इन्सपेक्टर पूछताछ के लिये लोभीलालजी के पास पहुँचा और बोला ह्न तुम सच बताओ, असली अपराधी के बारे में तुम क्या-

क्या जानते हो। वरना मैं तुम्हारी खाल उधेड़ कर रख दूँगा।

मैं निरपराधी हूँ, साहब ! मैंने कहा था न कि हत्या करनेवाला कोई और है । मुझे गिरफ्तार कर आपने अच्छा नहीं किया ह्न लोभीलालजी बोले।

शटअप ! मैं तुमसे अपराधी के बारे में पूछ रहा हूँ।

उसके बारे में मैं सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि वह बड़ा चालाक आदमी है। वह कभी भी हमारे सामने प्रगट नहीं होता।

बहुत कोशिश करने के बावजूद भी इन्सपेक्टर विवेककुमार लोभीलालजी से इससे ज्यादा कुछ भी उगलवा नहीं सका।

असली अपराधी को पकड़ना जरूरी था। ऊपर से भी भारी दबाव पड़ रहा था। पब्लिक सड़कों पर उतर आयी थी। आखिर थक कर इन्सपेक्टर विवेककुमार ने इस केस को सुलझाने में प्राइवेट जासूस मेजर सम्यग्ज्ञान बलवंत की मदद लेना ही ज्यादा उचित समझा।

फोन की घंटी टनटना उठी।

हलो ! मैं मेजर सम्यग्ज्ञान बोल रहा हूँ।

मेजर साहब ! जयजिनेन्द्र, मैं इन्सपेक्टर विवेककुमार ! एक केस के सिलसिले में हमें आपकी मदद की आवश्यकता है।

ठीक है, मैं अभी थाने पहुँचता हूँ आप वहीं पर रहना।

केस से सम्बन्धित फाइल का गहराई से अध्ययन तथा आवश्यक पूछताछ करने के पश्चात् मेजर साहब ने एक प्रश्न पूछा ह्न मिस्टर विवेककुमार।

यस सर ह्न इन्सपेक्टर विवेककुमार बोला।

आत्मा रूपी मकान के पड़ौस में किसका मकान है?

सर ! देहीमलजी अपर नाम शरीरकुमार का मकान है ह्न इन्सपेक्टर विवेककुमार ने बताया।

आत्मा और शरीरकुमार के सम्बन्ध कैसे हैं ?

दोनों में अत्यन्त घनिष्ठता है, सदा से ही बड़े मधुर सम्बन्ध हैं दोनों में।

हूँ, तो ये बात है ह्न मेजर सम्यग्ज्ञान बलवंत कुछ देर सोचता रहा फिर हौले-हौले से अपने होठों से सीटी बजाने लगा।

क्या हुआ सर ! इन्सपेक्टर विवेककुमार और हवलदार ईमानसिंह ने एक साथ पूछा।

अपराधी मिल गया ह्न मेजर सम्यग्ज्ञान मुस्कराते हुए बोला।

अपराधी मिल गया। कहाँ है? ह्न इन्सपेक्टर और हवलदार अपने अगल-बगल में झाँकते हुए आश्चर्यपूर्वक बोले।

कल भरी सभा में अपराधी को सबके सामने पेश किया जायेगा। मिस्टर विवेककुमार तुम एक प्रेस कान्फ्रेन्स का आयोजन करवाओ और सभी बड़े-बड़े सम्मानित व्यक्तियों, नेताओं और पत्रकारों को उसमें आमंत्रित करो ह्न मेजर सम्यग्ज्ञान ने कहा और इन्सपेक्टर को आवश्यक निर्देश देकर वहाँ से चला गया।

इन्सपेक्टर और हवलदार हैरान थे कि कई दिनों की मशक्कत के बाद भी जिस अपराधी को वे ढूँढ नहीं पाये, उसे मेजर साहब ने कुछ ही समय में कैसे ढूँढ निकाला ?

अगले दिन विशाल हॉल में प्रेस कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। सभी बड़े-बड़े पत्रकार, नेता, अधिकारी एवं सम्मानित व्यक्तियों के अलावा भारी संख्या में पब्लिक भी वहाँ उपस्थित हो चुकी थी। हॉल खचाखच भर गया था। सभी अपराधी को देखने के लिये बेताब हो रहे थे। मेजर सम्यग्ज्ञान बलवंत अपने साथियों के साथ वहाँ पहले से ही उपस्थित था।

वह माइक के सामने उपस्थित होकर बोला ह्न समस्त सम्माननीय महानुभावों, भाइयों तथा बहनों ! आज मैं आपके सामने उस सफेदपोश को बेनकाब करने जा रहा हूँ, जिसकी करतूतें बड़ी काली हैं। हवलदार ! अपराधी को सबके सामने लाया जाय।

मेजर का आदेश पाते ही इन्सपेक्टर और हवलदार अपराधी को लेकर सबके सामने उपस्थित हुये। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण टी.वी. चैनलों से भी हो रहा था, इसलिये वहाँ उपस्थित लोगों के अलावा सम्पूर्ण विश्व ने भी अपराधी को देखा। उसे काला-नकाब पहनाया गया था तथा उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाली गयी थीं। उसे कसकर टेबिल पर खड़ा किया गया तथा काले-नकाब को हटाया गया। सफेद कपड़े पहनाये गये उस बड़े से मानवाकार पुतले को देखकर सभी दंग रह गये। सफेद पुतले के ऊपर बड़े-बड़े काले अक्षरों में लिखा हुआ था ह्न **मिथ्यात्व उर्फ मिथ्यात्वीमलजी।**

मेजर पुतले की तरफ इशारा करते हुए बोला ह्न जी हाँ दोस्तो ! यही है असली अपराधी, यही वो हत्यारा है जो लोभीलालजी और क्रोधीलालजी आदि कषायों को सुख की हत्या के लिये प्रेरित करता रहता है। अपराधी रूपी सभी कषायें इसी के इशारे पर काम करती रहती हैं। यह इतना जालिम है कि किसी के सामने प्रगट ही नहीं होता और अदृश्य रहकर अपना सारा काम करता रहता है। फलस्वरूप इसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता।

वैसे तो इस महापापी के कई रूप हैं; परन्तु इसका असली रूप यह है कि जो इसका निकटतम पड़ौसी शरीरकुमार है, इसी के साथ इस कदर घनिष्ठता एवं एकता स्थापित कर लेता है कि अपने आपको शरीररूप ही अनुभव करने लग जाता है। शारीरिक सुख को ही अपना सुख और शारीरिक दु:ख को ही अपना दु:ख समझने लगता है। वाणी और मन के साथ एकता स्थापित कर लेता है और बस ! यही से सारे अपराधों की दास्तान शुरू हो जाती है। शारीरिक सुख की प्राप्ति के लिये इच्छायें अर्थात् लोभीलालजी रूपी गुण्डे पैदा होते हैं जो कि क्रोधीलालजी, मायाबाई, मानमलजी आदि अपने अनेक साथियों की सहायता से सुख की हत्या करते रहते हैं।

जब कभी भी तफ्तीश शुरू होती है तो इसके सहयोगी ही पकड़े जाते हैं और यह असली अपराधी साफ-साफ बच निकलता है जैसा कि इस बार भी मिस्टर विवेककुमार के हाथों हुआ।

मेजर साहब बिल्कुल ठीक कह रहे हैं ह्न इन्सपेक्टर विवेककुमार ने सिर हिलाते हुए हामी भरी।

मेजर साहब ! एक बात हमारी समझ में नहीं आयी कि आपने पलक झपकते ही अपराधी को कैसे खोज निकाला ? ह्न हवलदार ईमानसिंह ने पूछा।

जब मुझे मालूम हुआ कि आत्मा के अपने निकटतम पड़ौसी शरीरकुमार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है तो मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि मामला परपदार्थों में अपनापन स्थापित करने रूप अवैध सम्बन्धों का है और यह काम तो मिथ्यात्व के सिवाय दूसरा कोई कर ही नहीं सकता। बस फिर क्या था, हमने मिथ्यात्वीमलजी को धर दबोचा।

वाह, भई वाह ! मेजर साहब ! आपने तो कमाल कर दिखाया। सभा में उपस्थित सभी लोगों ने मेजर सम्यग्ज्ञान बलवंत की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

यह तो ठीक है दोस्तो ! महानुभावों ! लेकिन असली कमाल तो तब होगा जब इस महापापी का सम्पूर्ण विश्व में से ही खात्मा कर दिया

(शेष पृष्ठ 3 पर ....)

प्रवचनसार का सार

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे....)

तदनन्तर 'पुद्गल कर्मों की विचित्रता (ज्ञानावरण, दर्शनावरणादिरूप अनेक प्रकारता) को कौन करता है ?' इसका निरूपण करनेवाली गाथा 187 की टीका इसप्रकार है ह्न

'जैसे नये मेघजल के भूमिसंयोगरूप परिणाम के समय अन्य पुद्गलपरिणाम स्वयमेव वैचित्र्य को प्राप्त होते हैं; उसीप्रकार आत्मा के शुभाशुभ परिणाम के समय कर्मपुद्गल परिणाम वास्तव में स्वयमेव विचित्रता को प्राप्त होते हैं। वह इसप्रकार है कि जब नया मेघजल भूमिसंयोगरूप परिणमित होता है तब अन्य पुद्गल स्वयमेव विचित्रता को प्राप्त हरियाली, कुकुरमुत्ता (छत्ता) और इन्द्रगोप (चातुर्मास में उत्पन्न लाल कीड़ा) आदिरूप परिणमित होता है; इसीप्रकार जब यह आत्मा रागद्वेष के वशीभूत होता हुआ शुभाशुभ भावरूप परिणमित होता है, तब अन्य योगद्वारों से प्रविष्ट होते हुए कर्मपुद्गल स्वयमेव विचित्रता को प्राप्त ज्ञानावरणादि रूप परिणमित होते हैं।'

इसी बात को समझाने के लिए टीका में यह उदाहरण दिया है कि जब नये मेघों का जल भूमि से संयोग में आता है; तब अजीव बीज फलने-फूलने लगते हैं, घास उग आती है, कड़वे-मीठे-कषायले-चरपरे रसवाले सभी प्रकार के पेड़-पौधे उगने लगते हैं।

उन बीजों को किसी ने कुछ भी नहीं किया है, आठ महीने से वे वैसे ही पड़े थे; किन्तु नये मेघजल का संयोग मिलते ही वे पुद्गल स्वयमेव वैचित्र्य को प्राप्त होते हैं। ठीक उसीप्रकार आत्मा के शुभाशुभ परिणामों के समय कर्मपुद्गल परिणाम स्वयमेव विचित्रता को प्राप्त होते हैं।

मैंने यह भी देखा है कि जब तक तालाब में पानी भरा रहता है, तब तक मेढक टर्राते रहते हैं; लेकिन जब धीरे-धीरे पानी सूख जाता है तो वे उसी मिट्टी में दब जाते हैं तथा आठ महीने मिट्टी में वैसे ही दबे रहते हैं। वे जिन्दा रहते हैं या मर जाते हैं - इस संबंध में तो मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है; लेकिन जब पहली बरसात होती है, तो तालाब भरते ही मेढ़कों की टर्र-टर्र की आवाज आने लगती है।

अब यदि वे मेढ़क पैदा हुए हैं, तो उन्हें पैदा होने में कुछ समय तो लगना ही चाहिए; लेकिन वे पानी बरसने के घंटे-दो घंटे बाद ही बोलने लगते हैं। इसमें या तो यह हो सकता है कि वे आठ महीने से दबे रहने के बाद भी जिन्दा रहे हों और पानी मिलते ही बाहर आकर टर्राने लगे हों। अथवा यह हो सकता है कि वे उस समय मर गए हों और उनके शरीर सुरक्षित रहे हों तथा बरसात होते ही उनमें नये जीव आ गए हों और वे टर्राने लगे हों। कुछ भी हो मैं तो यहाँ यह बताना चाहता हूँ कि यह सब परिवर्तन नये मेघजल के संयोग से स्वयं होता है।

जिसप्रकार नये मेघजल से यह परिवर्तन स्वयं ही होते हैं; उसीप्रकार आत्मा के शुभाशुभ परिणाम के समय कर्मपुद्गल परिणाम स्वयमेव विचित्रता को प्राप्त होते हैं।

यहाँ आचार्यदेव यह स्पष्ट कर रहे हैं कि यदि कोई मोह-राग-द्वेष के भाव करेगा तो कार्माण-वर्गणाएँ ज्ञानावरणादि कर्मरूप परिणमित होकर उसके साथ एकक्षेत्रावगाह हो ही जाएगी। जो भी कर्मों का बंध होता है; वह मोह-राग-द्वेष के कारण होता है। कर्मों का बंध न तो पर को जानने के कारण होता है और न ही पर के कारण होता है।

इसके बाद गाथा 188 देखिए ह्न

सपदेसो सो अप्पा कसायिदो मोहरागदोसेहिं।
कम्मरएहिं सिलिट्ठो बंधो त्ति परूविदो समये।।

(हरिगीत)

सप्रदेशी आतमा रुस-राग-मोह कषाययुत।
हो कर्मरज से लिप्त यह ही बंध है जिनवर कहा।।

प्रदेश युक्त वह आत्मा यथाकाल मोह-राग-द्वेष के द्वारा कषायित होने से कर्मरज से लिप्त या बद्ध होता हुआ 'बंध' कहा गया है।

इस गाथा का अर्थ करते हुए टीका में लिखा है कि जिसप्रकार जगत में वस्त्र सप्रदेश होने से लोध, फिटकरी आदि से कषायित होता है; जिससे वह मजीठादि के रंग से संबद्ध होता हुआ अकेला ही रंगा हुआ देखा जाता है; इसीप्रकार आत्मा भी सप्रदेश होने से यथाकाल मोह-राग-द्वेष के द्वारा कषायित होने से कर्मरज के द्वारा श्लिष्ट होता हुआ अकेला ही बंध है; ऐसा देखना (मानना) चाहिये; क्योंकि निश्चय का विषय शुद्ध द्रव्य है।

देखो, यहाँ अकेले आत्मा को बंधरूप कहा है और इस गाथा के बाद वह गाथा आती है कि जिसकी टीका में यह लिखा है कि मोह-राग-द्वेषरूप परिणमन आत्मा का है और इन मोह-राग-द्वेष का कर्त्ता भी भगवान आत्मा है।

ध्यान देने की बात यह है कि सर्वत्र तो मोह-राग-द्वेष का कर्त्ता आत्मा को अशुद्धनिश्चयनय से कहा है और यहाँ इस गाथा की टीका में शुद्धनिश्चयनय से कहा है। मैंने आज तक जितनी भी जिनवाणी देखी है, उनमें मुझे यह एक ही प्रयोग मिला है; जिसमें मोह- राग-द्वेष का कर्त्ता आत्मा को शुद्धनिश्चयनय से कहा है।

वह 189 गाथा इसप्रकार है ह्न

एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयेण णिद्दिट्ठो।
अरहंतेहिं जदीणं ववहारो अण्णहा भणिदो।।

(हरिगीत)

यह बंध का संक्षेप जिनवरदेव ने यतिवृन्द से।
नियतनय से कहा है व्यवहार इससे अन्य है।।

यह जीवों के बंध का संक्षेप निश्चय से अरहंत भगवान ने यतियों से कहा है और व्यवहार अन्य प्रकार से कहा है।

इस गाथा की जिस टीका में आचार्य अमृतचन्द्र ने आत्मा को राग-द्वेष का कर्ता शुद्धनिश्चयनय से कहा है, उस टीका का भाव इसप्रकार हैह्न

''राग परिणाम ही आत्मा का कर्म है, वही पुण्य-पापरूप द्वैत है। आत्मा राग परिणाम का ही कर्त्ता है, उसका ही ग्रहण करने वाला है और उसी का त्याग करनेवाला है; यह शुद्धद्रव्य का निरूपणस्वरूप निश्चयनय है। और

जो पुद्गल परिणाम आत्मा का कर्म है, वही पुण्य-पापरूप द्वैत है, आत्मा पुद्गल परिणाम का कर्त्ता है, उसका ग्रहण करनेवाला और छोड़नेवाला है ह्न ऐसा जो नय वह अशुद्धद्रव्य के निरूपणस्वरूप व्यवहारनय है।

यह दोनों (नय) हैं; क्योंकि शुद्धरूप और अशुद्धरूप ह्न दोनों प्रकार से द्रव्य की प्रतीति की जाती है; किन्तु यहाँ निश्चयनय साधकतम (उत्कृष्ट साधक) होने से ग्रहण किया जाता है; क्योंकि साध्य के शुद्ध होने से द्रव्य के शुद्धत्व का द्योतक (प्रकाशक) होने से निश्चयनय ही साधकतम है; किन्तु अशुद्धत्व का द्योतक व्यवहारनय साधकतम नहीं है।''

'शुद्धद्रव्य का निरूपण निश्चयनय है' यहाँ शुद्धनिश्चयनय से इसलिए कहा है; क्योंकि शुद्धद्रव्य अर्थात् पर का नहीं है अर्थात् पर से इसमें कुछ गड़बड़ी नहीं होती। पर का संयोग नहीं है, यही इस शुद्धद्रव्य की शुद्धता है, इसलिए शुद्धद्रव्य का निरूपण निश्चयनय है।

टीका में जो यह कहा है कि 'यह दोनों नय हैं' इसका तात्पर्य यह है कि इन दोनों प्रकार के नयों की सत्ता है। इसप्रकार इस गाथा में रागादिक का कर्त्ता भगवान आत्मा को शुद्धनिश्चयनय से कहा है और द्रव्यकर्म का कर्ता अशुद्धनिश्चयरूप व्यवहारनय से कहा है।

अरे भाई ! 'यह प्रवचनसार में ही लिखा है' ह्न ऐसा नहीं है। समयसार में भी अशुद्धनिश्चयनय से ही सही पर रागादि का कर्ता आत्मा को बताया है। लिखा है ह्न **'य: परिणमति स कर्त्ता'** अर्थात् जो जिसरूप परिणमित होता है, वह उस परिणमन का कर्त्ता होता है। आत्मा रागरूप परिणमित होता है तो आत्मा राग का कर्त्ता है। सम्यग्दृष्टि को रागरूप परिणमन है; लेकिन राग में कर्तृत्वबुद्धि नहीं है तथा उस राग में कर्तृत्वबुद्धि, ममत्वबुद्धि नहीं होने से समयसार में अकर्त्ता भी कहा है।

इसप्रकार यह परमागम की एक ही ऐसी गाथा है, जिसमें मोह-राग द्वेष का कर्त्ता आत्मा को शुद्धनिश्चयनय से कहा है। ●

बीसवाँ प्रवचन

आचार्य कुन्दकुन्द की अमरकृति प्रवचनसार परमागम के ज्ञेयतत्त्व-प्रज्ञापन महाधिकार के ज्ञेयज्ञानविभागाधिकार पर चर्चा चल रही है, जिसमें गाथा 189 की चर्चा आचार्य अमृतचन्द्र की टीका सहित हो चुकी है।

आचार्य अमृतचन्द्र के 300 वर्ष बाद जब आचार्य जयसेन का इस बात पर ध्यान केन्द्रित हुआ; तब उन्होंने स्पष्ट किया है कि ऐसा उपचार से कह दिया है। 'उपचार से शुद्धनिश्चयनय कह दिया है' का तात्पर्य यह है कि व्यवहारनय से शुद्धनिश्चयनय कह दिया है, अन्यथा उपचार तो निश्चयनय में लगता ही नहीं है। उपचरित-सद्भूतव्यवहार नय, उपचरित-असद्भूतव्यवहारनय ह्न ऐसे उपचार तो व्यवहारनय में ही लगते हैं, निश्चयनय में नहीं।

'आत्मा रागादि का कर्त्ता शुद्धनिश्चयनय से है' इसका विश्लेषण अच्छी तरह से किया जा चुका है। तदनन्तर 'अशुद्धनय से अशुद्ध आत्मा की ही प्राप्ति होती है' ह्न ऐसा कथन करनेवाली गाथा 190 इसप्रकार है ह्न

ण चयदि जो दु ममत्तिं अहं ममेदं ति देहदविणेसु।
सो सामण्णं चत्ता पडिवण्णो होदि उम्मग्गं ।।

(हरिगीत)

तन-धनादि में 'मैं हूँ यह' अथवा 'ये मेरे हैं' सही।
ममता न छोड़े वह श्रमण उनमार्गी जिनवर कहें ।।

जो देह-धनादिक में 'मैं यह हूँ और यह मेरा है' ऐसी ममता को नहीं छोड़ता, वह श्रमणता को छोड़कर उन्मार्ग का आश्रय लेता है।

इस गाथा में निहित सरल भाव यह है कि जो व्यक्ति धन सम्पत्ति में ममत्व नहीं छोड़ता है, वह श्रमण होकर भी उन्मार्ग में है अर्थात् सच्चे मार्ग में नहीं है। यहाँ जो बातें ध्यान देने योग्य हैं, उसमें पहली तो यह है कि श्रमण के पास देह तो है; पर धन नहीं; फिर भी धन के प्रति ममत्व कैसे हो जाता है ?

अरे भाई ! यह हो सकता है कि श्रमण को अपने धनादि से ममत्व नहीं हो; किन्तु संस्थादि के नाम पर या अन्य किसी रूप में उन्हें धनादि से ममत्व हो सकता है। इस चीज का नंगा नाच आजकल प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। यह भी संभव है कि इसी के थोड़े अंश आचार्य कुन्दकुन्द के समय रहे हों; इसीलिए गाथा में उन्हें धन के प्रति ममत्व छोड़ने का उल्लेख करना पड़ा।

इस गाथा के संबंध में दूसरी बात यह भी है कि इस गाथा में देह और धन के संबंध में लिखा; किन्तु राग-द्वेष-मोह के संबंध में नहीं लिखा।

अरे भाई ! गाथा में 'ममत्व' शब्द लिखकर ममत्व को भी छुड़ाया है। देह व धन जब अपने है ही नहीं, तब उन्हें छोड़ने और ग्रहण करने का मतलब ही क्या है ? वास्तव में तो उन के प्रति जो मोह और राग है, उस मोह और राग को छोड़ना है।

आचार्य यहाँ यह कह रहे हैं कि यदि श्रमण होना है, तो ममत्व छोड़ना पड़ेगा और ममत्व छोड़ने का तात्पर्य ही मोह-राग-द्वेष छोड़ना है।

इस संदर्भ में इसी गाथा की टीका भी द्रष्टव्य है ह्न

''जो आत्मा शुद्धद्रव्य के निरूपणरूप निश्चयनय से निरपेक्ष रहकर अशुद्धद्रव्य के निरूपणरूप व्यवहारनय से जिसे मोह उत्पन्न हुआ है और ऐसा वर्तता हुआ 'मैं यह हूँ और यह मेरा है' इसप्रकार आत्मीयता से देह धनादिक परद्रव्य में ममत्व नहीं छोड़ता; वह आत्मा वास्तव में शुद्धात्मपरिणतिरूप श्रामण्यनामक मार्ग को दूर से छोड़कर अशुद्धात्म परिणतिरूप उन्मार्ग का ही आश्रय लेता है। इससे निश्चित होता है कि अशुद्धनय से अशुद्धात्मा की ही प्राप्ति होती है।''

यहाँ आत्मीयता का तात्पर्य अपनेपन की भावना है। 'यह मैं हूँ' इसप्रकार की अपनत्वबुद्धि का नाम ही आत्मीयता है। अपनेपन की भावनारूप जो राग होता है, उसे भी दुनिया में ममत्व कहा जाता है। राग-द्वेष-मोह आदि अशुद्धनिश्चयनय से आत्मा के कहे जाते हैं तथा अशुद्धनिश्चयनय से अशुद्धात्मा की प्राप्ति होती है।

अरे भाई ! 'रागादिक जीव ने किये हैं' यदि इस कथन को अशुद्ध-निश्चयनय का कहेंगे, तब अशुद्धनिश्चयनय तो व्यवहार होता है एवं व्यवहार असत्यार्थ होता है; इसलिए वह जीव ऐसा मानेगा ही नहीं कि रागादि मैंने किये हैं, तथा वह रागादिक त्यागने की जिम्मेदारी भी महसूस नहीं करेगा; वह अपने अन्दर रागादिक होने की अपराधवृत्ति को स्वीकार ही नहीं करेगा। इसलिए आचार्य ने उन्हें शुद्धनिश्चयनय से कह दिया है। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. **चैतन्यधाम (गुजरात) :** यहाँ स्व. श्री कान्ताबेन कचरालाल शाह (अलूवा) अहमदाबाद परिवार के सौजन्य से व धर्मरत्न पण्डित बाबुभाई चुन्नीलाल मेहता अभिनन्दन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 14 मई से 21 मई, 2006 तक आयोजित सोलहवें बाल संस्कार शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री विपिनभाई दोशी मुम्बई के करकमलों से हुआ।

शिविर में प्रतिदिन जिनेन्द्र पूजनोपरान्त सदाचार एवं नैतिक कर्त्तव्यों की सामूहिक कक्षा पण्डित बाबुभाई मेहता फतेपुर तथा दोपहर में पंच भाव की कक्षा पण्डित दीपकजी कोटड़िया ने ली। रात्रि में पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद के प्रवचनसार के सुख अधिकार की गाथा 69 से 75 पर मार्मिक प्रवचन हुये।

आपके अतिरिक्त पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित रत्नेशजी मेहता हिम्मतनगर, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित निखिलजी शास्त्री बण्डा, आदि विद्वानों का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन का लाभ उपस्थित साधर्मियों को प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गए। शिविर में आये हुए लगभग 190 बालकों को श्री ताराचन्दजी मफतलालजी गांधी परिवार तलोद की ओर से **हम होंगे ज्ञानवान** सी.डी. भेंट दी गई।

2. **बरगी (जबलपुर-म.प्र.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर में प्रथम बार दिनांक 3 मई से 10 मई, 06 तक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी द्वारा प्रात: सामूहिक पूजनोपरान्त छहढाला पर प्रवचन, दोपहर में द्रव्यसंग्रह की कक्षा, सायंकाल बालकक्षा व जिनेन्द्र भक्ति तथा रात्रि में प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

प्रथम बार ही इसप्रकार के शिविर का आयोजन देख समाज के लोगों ने अत्यधिक प्रसन्नता जाहिर की तथा प्रतिवर्ष इसप्रकार के दो शिविर लगाने की स्वीकृति प्रदान की। श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला की स्थापना भी की गई।

3. **बेलगाँव (कर्ना.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति के तत्त्वावधान में दिनांक 2 मई से 6 मई 2006 तक बेलगाँव जिले के अन्तर्गत 5 स्थानों पर सामूहिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

जिसमें **अथणी** में पण्डित महावीरजी बखेडी बेलगाँव, पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले, पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील कोल्हापुर एवं सौ. पाटील बेडकिहाल **उगार बुद्रुक** में पण्डित बी. जी. बखेडी बेलगाँव, **संकोनटी** में पण्डित बालासाहेब वसवडे शिरदवाड, **ऐगली** में पण्डित राजेन्द्रजी सांगावे एवं **मुत्तुर** में पण्डित अनेकान्तजी आलप्पणवर उगार द्वारा महती धर्मप्रभावना की गई।

शिविर में समस्त स्थानों पर प्रतिदिन पूजन, कक्षा, प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति तथा रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

दिनांक 6 मई को आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, अथणी में समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री कंचनश्री माताजी के सान्निध्य में शांतिविधान सम्पन्न हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील एवं पण्डित बालासाहेबजी ने कराये।

शिविर में लगभग 550 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया तथा 3500 रुपयों के सत्साहित्य की बिक्री हुई। सभी जगहों पर कक्षा एवं प्रवचन कन्नड़ भाषा में हुये।

उपकार दिवस सानन्द मनाया

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ अहिंसास्थली गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाड़ा के सदस्यों ने वैशाख सुदी एकम को श्री कुन्थुनाथ भगवान का जन्म, तप एवं निर्वाणकल्याणक महोत्सव तथा वैशाख सुदी दोज को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी का जन्म दिवस उपकार दिवस के रूप में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

दो दिवसीय आयोजन में सामूहिक पूजन व गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रवचनों का समाज को लाभ मिला। साथ ही गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विशेष आम सभा का आयोजन भी किया गया।

इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक संगोष्ठी, सायंकाल पाठशाला व जिनेन्द्र भक्ति तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

विशेष आयोजन के अन्तर्गत जिला चिकित्सालय, टी. बी. हॉस्पीटल एवं वृद्धाश्रम को कलेक्टर श्री अरुण पाण्डे, सी.एम.ओ. डॉ. के. के. श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. के. सी. जैन की उपस्थिति में फैडरेशन के सदस्यों द्वारा लगभग 800 रोगियों को फलाहार का वितरण किया गया। **ह्न दीपकराज जैन**

तत्त्वप्रचार-प्रसार की तीसरी वर्षगांठ सम्पन्न

बाजारगांव (नागपुर-महा.) : यहाँ महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार-प्रसार योजना की तृतीय वर्षगांठ पण्डित सुबोधजी जैन सिवनी की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुई। इस अवसर पर महाराष्ट्र प्रान्त के करीब 130 कार्यकर्त्ता सम्मेलन में सम्मिलित हुये।

सम्मेलन में श्री विश्वलोचनकुमारजी जैनी द्वारा महाराष्ट्र प्रान्त में चलाई जा रही गतिविधियों का विवरण दिया गया। साथ ही पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर ने भी अपने विचार व्यक्त किये। दोपहर में स्थानीय दिग. जैन मंदिर में श्री शांति विधान का आयोजन किया तथा पण्डित सुबोधजी के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में पधारे समस्त मुमुक्षु भाईयों को श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। आभार प्रदर्शन श्री रविजी मोदी ने किया। ●

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (प्रथम) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127